Impact Factor 3.025

ISSN 2349-638x

Refereed And Indexed Journal

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Monthly Publish Journal

VOL-IV ISSUE-IV APR. 2017

Address
· Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
· Tq. Latur, Dis. Latur 413512 (MS.)
· (+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
· aiirjpramod@gmail.com
· aayushijournal@gmail.com

Website
· www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

छायावादी काव्य में राष्ट्रीय चेतना

ज्योति
सहायक प्रर्वक्ता
गोपी चन्द आर्य महीला कॉलेज, अबोहर।

राष्ट्रीय भावना वैदिक काल से चली आती हुई पौराणिक युग में सक्रिय रही है। रामायण और महाभारत में राष्ट्रीय चेतना के स्तर मुखरित होते हुए सुनाई देते है। आधुनिक काल में राष्ट्रीय चेतना को आधार बनाकर काव्य रचनाए लिखी गई है। आधुनिक युग के तृतीय उत्थान के रूप में छायावाद का उदय हुआ। छायावाद भी राष्ट्रीय भावना से अछूता न रहा।

डा. नगेन्द्र के अनुसार– नैतिकता और उपदेशात्मकता के प्रति विद्रोह लेकर जन्मी भावनाएं अंतर्मुखी होकर धीरे–2 अवचेतन की सृष्टि कर रही थी।..... आशा के इन्ही स्वजो और निराशा के छायाचित्रो की समष्टि का नाम ही छायावाद है।

छायावादी युग में राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम अपने यौवन पर था। इसलिए इनकी कविताओ में राष्ट्रीय जागरण व स्वतंत्रता प्रेम का शंखनाद सुनाई पड़ता है। हिन्दी के कवियो ने राष्ट्र प्रेम के भावो के साथ अपनी काव्य प्रतिभा का प्रदर्शन किया। सभी छायावाद कवि अपनी रचनाओं में राष्ट्रीय चेतना का संदेश देने लगे। प्रसाद के नाटको में अनेक ऐसे गीत है जिनमे राष्ट्रीय चेतना का स्वर गूंजता हुआ सुनाई देता है।

''अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो
प्रशस्त पुण्य पंथ है, बढ़े चलो, बढ़े चलो।''

इस प्रकार प्रसाद ने इन पंक्तियों के माध्यम से भारतीयों को वीर कहकर अपने लक्ष्य ओर बढ़ने का संदेश दिया है।

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने 'जागो फिर एक बार', 'खून की होली जो खेली' आदि कविताओं के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना के स्वर को मुखरित किया है।

तुम हो महान्
तुम सदा हो महान्
है नश्वर यह दीन भाव
जागो फिर एक बार।

इन कवियो की व्यविता में भारतीय राष्ट्रीय जागरण का शंखनाद सुनाई देता है। श्यामनारायण पाण्डे ने अपने 'हल्दी घाटी' महाकाव्य व जयशंकर प्रसाद ने 'पेशोला की प्रतिध्वनि' कविता में महाराणा प्रताप की यशोगाथा का वर्णन करके स्वतंत्रता की प्रेरणा दी है। दिनकर ने हकांर व कुरूक्षेत्र में राष्ट्रीय भावनाओं को प्रतिष्ठित किया है।

''तीनो लोक चकित सुनते है
घस्थ्य ही कहानी है
खेल रही नेजो पर चढ़कर
रस से भरी जवानी है।

छायावाद उस राष्ट्र जागरण की कलात्मक और काव्यात्मक अभिव्यक्ति है जो एक ओर विदेशी पराधीनता से और दूसरी ओर पुरानी रूढ़ियो से मुक्ति चाहता है। स्वदेश, संस्कृति व स्वालम्बन के प्रति इनकी कविता में उन्होनें स्वतंत्रता का संदेश इस प्रकार दिया है।

''सोचो तुम, उठती नग्न तलवार है, स्वतंत्रता की
जितने ही भावों से, याद दिला दुःख दारूण परतंत्रताकी।''

छायावादी कवियो ने जनता में देश प्रेम और देशभक्ति का भाव जगाने का प्रयास किया है। इस काव्य ने देश की स्वाधीनता के लिए साधना की। सुभद्राकुमारी चौहान ने भी राष्ट्रीय आंदोलन की नेता रही। वे अपनी कविताओं झण्डे की इज्जत, स्वदेश के प्रति, झांसी की रानी, जलियावाला बाग' कविताओ राष्ट्रीय भावनाओं से ओत प्रोत है।

बुंदेले हर बोलो के मुंह हमने सुनी कहानी थी
खूब लड़ी मर्दानी, वो तो झांसी वाली रानी थी।

'एक भारतीय आत्मा' से संबोधित माखनलाल चतुर्वेदी की कविता देश पर बलिदान होने की प्रेरणा सर्वाधिक है। 'पुष्प की अभिलाषा' राष्ट्रीय भाव की अमर रचना है जिससे युगो तक देश भक्त प्रेरणा लेते रहेंगे।

''मुझे तोड़ लेना वन माली उस पथ पर देना तू फेंक
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पंथ जावे वीर अनेका।''

बाल कृष्ण नवीन भी स्वाधीनता संग्राम के सेनामी थे। वे राष्ट्रवादी कविता के माध्यम से जनमानस को प्रेरित कर रहे है।

कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ जिससे उथल पुथल मच जाए।
एक हिलोर इधर से आता, एक हिलोर उधर से आए।

इस तरह छायावाद की राष्ट्रीय चेतना में इन कवियो ने मातृभूमि की वंदना, देश की अतीत गान और स्वतंत्रता संघर्ष की प्रेरणा देने वाला काव्य रचा। हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय की भावना भारतेदुं युग से चलकर छायावाद में अपने रूधन रूप में प्रस्फुटित हुई और छायावादोतर युग में विधमान रह हिन्दी साहित्य पर अपनी अमिट छाप छोड़ गयी है।

संदर्भ सूची

- हिन्दी साहित्य का इतिहास – डा. नगेन्द्र
- हिन्दी साहित्य का इतिहास – डा. विज

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com